इलेक्शन से पहले चीनी की महंगाई से सरकार परेशान

6 महीनों में 36% और पिछले 15 दिनों में 7.2% बढ़े दाम

[जयश्री भोसले | पुणे]

पिछले छह महीने में चीनी की कीमत 36 पर्सेंट और पिछले 15 दिनों में 7.2 पर्सेंट बढ़ी है। चार राज्यों में विधानसभा चुनाव से पहले चीनी की महंगाई ने केंद्र सरकार की फिक्र बढ़ा दी है। उसने इंडस्ट्री से चीनी की कीमत 'कंफर्टेबल' लेवल के अंदर रखने को कहा है। सेंट्रल गवर्नमेंट अथॉरिटीज ने इसके साथ इंडस्ट्री को किसानों को गन्ने की बकाया कीमत भी चुकाने के लिए कहा है।

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के डायरेक्टर जनरल अबिनाश शर्मा ने भी चीनी के दाम बढ़ने से सरकार के चिंतित होने की पुष्टि की। उन्होंने कहा, 'सरकार ने एसोसिएशंस से 15 दिनों के अंदर चीनी के दाम में 7 पर्सेंट से अधिक की तेजी पर बात की है। देश में चीनी की कमी नहीं है। ऐसे में सरकार जमाखोरी करने वालों के खिलाफ एक्शन ले सकती है।' दिल्ली मार्केट में एनसीडीईएक्स स्पॉट शुगर प्राइस एक महीने के अंदर 10.4 पर्सेंट चढ़ा है।

पिछले साल 1 अक्टूबर को नया शुगर सीजन शुरू होने के बाद से चीनी के दाम में दिल्ली मार्केट में 36 पर्सेंट की बढ़ोतरी हो चुकी है

1 मार्च को इसकी कीमत 3,315 रुपये प्रति क्विंटल थी, जो 31 मार्च को 3,660 रुपये प्रति क्विंटल चल रही थी। चीनी के दाम में अचानक तेजी आई है। 15 मार्च से 31 मार्च के बीच इसकी कीमत 7.2 पर्सेंट बढ़ी है। वहीं, पिछले साल 1 अक्टूबर को नया शुगर सीजन शुरू होने के बाद से इसके दाम में दिल्ली मार्केट में 36 पर्सेंट की बढ़ोतरी हो चुकी है।

इंडस्ट्री के सूत्रों ने बताया कि अथॉरिटी मौजूदा शुगर इंपोर्ट, एक्सपोर्ट पॉलिसी को लेकर चिंतित है। इस पॉलिसी के तहत चीनी के एक्सपोर्ट को बढ़ावा दिया जा रहा है और इंपोर्ट कम रखने के लिए 40 पर्सेंट की भारी-भरकम ड्यूटी लगाई गई है। हालांकि, इंडस्ट्री के लोगों ने यह भी कहा कि सरकार चीनी के दाम बढ़ने को लेकर पैनिक मोड में नहीं है। उनके मुताबिक, चीनी अभी जिस कीमत पर मिल रही है, चिंता उसे लेकर नहीं है। सरकार की फिक्र की वजह कम समय में दाम में बढ़ोतरी है।

क्रशिंग सीजन शुरू होने के बाद से चीनी के दाम में 1,000 रुपये प्रति क्विंटल का इजाफा हो चुका है। ऐसे में केंद्र सरकार ने गन्ने की खेती वाले राज्यों के गन्ना कमिश्नरों को किसानों की बकाया रकम चुकाने का निर्देश दिया है।

शुगर प्रॉडक्शन 11 लाख टन कमः ISMA

[ईटी ब्यूरो | पुणे]

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन ने कहा है कि भारत में 2015-16 में शुगर प्रॉडक्शन 31 मार्च तक पिछले साल की इसी अवधि के मुकाबले 4.43% कम रहा। हालांकि उसे उम्मीद है कि महाराष्ट्र में चीनी उत्पादन में कमी की आशंका के बावजूद 1 अक्टूबर 2016 को ओपनिंग स्टॉक घरेलू जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त होगा।

ISMA के मुताबिक, शुगर इयर के बाकी हिस्से के दौरान महाराष्ट्र में करीब 6 लाख टन, यूपी में 5 लाख टन, कर्नाटक में 2 लाख टन, तमिलनाडु में 6 लाख टन और दूसरे चीनी उत्पादक राज्यों में कुछ और लाख टन उत्पादन 1 अप्रैल के बाद हो सकता है। इससे संकेत मिल रहा है कि पिछले साल के 283 लाख टन के मुकाबले कुल उत्पादन इस बार 256 लाख टन रह सकता है और इस तरह इसमें करीब 10% की गिरावट रहेगी। ISMA के मुताबिक, 31 मार्च 2016 तक देश में कुल उत्पादन 237 लाख टन रहा, जो पिछले साल की समान अवधि से 11 लाख टन कम है।